TRANSLATION-THEORY AND PRACTICE

B.A.HINDI

II Semester

(2014 Admn.)

CU-CBCSS

Core course

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut university P.O, Malappuram, Kerala, India 673 635.

582

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

B.A.HINDI

I Semester

(2014 Adm.)

CU-CBCSS

Core course

Translation-Theory and Practice

Prepared Edited and Scrutinised by

Dr.Pramod Kovvaprath
Associate Professor
Dept.of Hindi
University of Calicut.

Type settings & Lay out

Computer Section, SDE

©

Reserved

विषय सूची

Module 1

1. अनुवाद का अर्थ
2. अनुवाद का महत्व
3. अनुवाद की परिभाषा
4. अनुवाद और प्रतीकांतर
5. अनुवाद – शिल्प, कला या विज्ञान
6. अनुवादक के गुण
7. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

Module 2

8. अनुवाद के प्रकार
9. काव्यानुवाद
10. मुहावरे लोकोक्तियों का अनुवाद
11. अनुवाद के क्षेत्र
12. कार्यालयी अनुवाद

Module 3

13. पारिभाषिक शब्द-अर्थ
14. पारिभाषिक शब्द के गुण
15. पारिभाषिक शब्दावली के संप्रदाय
16. पारिभाषिक शब्द
17. कंप्यूटर और अनुवाद

Module 4

18. अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद
19. हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद

Module-1

1. अनुवाद का अर्थ

अनुवाद शब्द का संबंध वद् धातु से है, जिसका अर्थ होता है बोलना या कहना। वद् धातु में **घञ्** प्रत्यय लगने से वाद शब्द बनता है, और फिर उसमें पीछे, बाद में, अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त अनु उपसर्ग जुड़ने से अनुवाद शब्द निष्पन्न होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है पुनःकथन या किसी के कहने के बाद कहना।

शब्दार्थ चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ प्राप्तस्य पुनःकथने या ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने अर्थात पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना आदि दिया गया है।

प्राचीन भारत में शिक्षा की मौलिक परंपरा थी। गुरु जो कहते थे, शिष्य उसे दुहराते थे। इस दुहराने को भी अनुवाद या अनुवचन कहते थे। अनुवाक् भी मूलतः यही था, यद्यपि बाद में इसका अर्थ वेद का प्रभाग हो गया - मूलतः कदाचित् उतना भाग जिसे एक बार गुरु से सुनकर दुहराया या पढ़ा-सीखा जा सके।

इस प्रकार संस्कृत में अनुवाद शब्द का प्रयोग गुरु की बात का शिष्य द्वारा दुहराया जाना, पश्चात्कथन, दुहराना, पुनःकथन, कहना, ज्ञात को कहना, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, विधि या विहित का पुनःकथन, आवृत्ति, सार्थक आवृत्ति आदि अर्थों में हुआ है। यों तो इसमें कोई भी अर्थ आज के अनुवाद शब्द का ठीक अर्थ नहीं है, किंतु यह स्पष्ट है कि इनमें से अधिकांश अर्थ आज के अर्थ से बहुत दूर नहीं कहे जा सकते। अनुवाद मूलतः पुनःकथन या किसी के कहे जाने के बाद का कथन है, और आज के प्रयोग में भी वह किसी के कथन का पुनःकथन ही है – एक भाषा में किसी के द्वारा कही गई बात का किसी दूसरी भाषा में पुनःकथन।

2. अनुवाद का महत्व

अनुवाद प्राचीन काल में जितना प्रासंगिक है उससे अधिक आज प्रासंगिक है। इसके द्वारा ही मनुष्य बहुभाषिक स्थिति की विडंबना से बच पाये हैं। अनुवाद करने का तात्पर्य है दो भाषाओं की बाह्य भिन्नताओं की तह में जाकर मानवीय अस्तित्व के समान तत्वों को प्रकाश में लाना। अनुवाद बहुभाषी विश्वजनता के बीच एक सुदृढ़ सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। अनुवाद के द्वारा ही विश्व साहित्य, विश्व बंधुत्व आदि परिकल्पनाएँ संभव हैं।

अनुवाद वर्तमान संदर्भ में महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण, बाज़ारीकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अनुवाद के बिना आगे बढ़ना असंभव है। मुख्य रूप से अनुवाद का महत्व निम्न क्षेत्रों में है – साहित्य, संस्कृति, पत्राचार, प्रशासन, कार्यालय, धर्म, दर्शन, न्यायालय, शिक्षा, समाज विज्ञान, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, संप्रेषण, संचार, राजनीति, कूटनीति, पर्यटन आदि।

3. अनुवाद की परिभाषा

एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। अनुवाद को तरह-तरह से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। तीन प्रसिद्ध परिभाषाएँ हैं –

1. Translation consist in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style. - Nida
2. The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language. - Cattord
3. Translation is the transference of the content of a text from one language in to another, bearing in mind that we can not always dissociate the content from the form. - Foresten

भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम, समतुल्यऔर सहज प्रतिप्रतीकन या यथाससाध्य समानक प्रतिप्रतीकन है।

4. अनुवाद और प्रतीकांतर

प्रतीकों का परिवर्तन ही प्रतीकांतर है। दूसरे शब्दों में, एक प्रतीक (या प्रतीक-वर्ग) द्वारा व्यक्त विचार (या विचारों) को दूसरे प्रतीक (या प्रतीक-वर्ग) द्वारा व्यक्त करना प्रतीकांतर है।

प्रतीकांतर के तीन प्रकार होते हैं –

शब्दांतर - शब्दांतर या शब्द-प्रतीकांतर का अर्थ है किसी भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में दूसरे शब्दों में व्यक्त करना। इसमें भाषा वही रहती है, केवल एक शब्द-प्रतीक या प्रतीकों के स्थान पर दूसरे शब्द-प्रतीक या प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण केलिए श्रीमन् बैठिए का शब्दांतर है जनाब अली तशरीफ़ रखिए।

माध्यमांतर – एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर दूसरे माध्यम के प्रतीकों का प्रयोग। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति हाथ के संकेत से किसी को अपने पास बुला रहा है। बुलाए जानेवाले व्यक्ति ने देखा नहीं, अतः बुलाने वाले ज़ोर से कहा , इधर आओ। यह माध्यमांतर है, संकेत केस्थान पर भाषा के प्रतीकों का प्रयोग। एक कवि जो भाव एक कविता में व्यक्त कर सकता है, एक चित्रकार उसी भाव को एक चित्र में व्यक्त कर सकता है, तथा एक संगीतकार उसी को संगीत के द्वारा। ये सभी माध्यमांतर हैं।

भाषांतर – एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में व्यक्त करना भाषांतर है। इसी को अनुवाद या तरजुमा आदि भी कहते हैं।

5. अनुवाद – शिल्प, कला या विज्ञान

कुछ लोग अनुवाद को केवल शिल्प मानते हैं तो कुछ लोग कला। अनुवाद को विज्ञान प्रायः लोग बिल्कुल नहीं मानते। अनुवाद शिल्प भी है, कला भी है और विज्ञान भी है। दूसरे शब्दों में अंशतः वह शिल्प है, अंशतः वह कला है तथा अंशतः विज्ञान।

विज्ञान किसी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान होता है। अनुवाद प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है तथा वास्तविक अनुवाद करने के पूर्व की चिंतन प्रक्रिया तुलनात्मक या व्यतिरेकी भाषाविज्ञान पर ही पूर्णतः आधृत है। तुलना आधार पर ही स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ संबंधी समानताएँ-असमानताएँ ज्ञात करते हैं और फिर असमानताओं की समस्या सुलझाने के लिए कुछ अपवादों को छोड़कर प्रायः निश्चित नियमों का अनुसरण करते हैं। इस तरह वास्तविक अनुवाद करने की पूर्व-पीठिका जो अनुवादक के मस्तिष्क में चिंतन के रूप में होती है पूर्णतः वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया है। अनुवाद का यह विज्ञान-पक्ष वास्तविक अनुवाद प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में होता है, अनुवाद करने में नहीं।

जहाँ तक अनुवाद की बात है, अनुवादक अनुवाद में आत्माभिव्यक्ति नहीं करता जो कवि, मूर्तिकार आदि कलाकार अपनी कृति में करते हैं। इस प्रकार अनुवाद उश रूप में तो कला निश्चय ही नहीं है, जिस रूप में काव्य, चित्र, मूर्ति आदि हैं, किंतु अनुवादक का व्यक्तित्व अनुवाद में अवश्य ही बड़ा प्रभावी होता है। इसलिए एक ही मूल सामग्री के दो व्यक्तियों द्वारा किए गए अनुवाद प्रायः भिन्न होते हैं। इस तरह अनुवादक भी एक सीमा तक सर्जक है और काव्य आदि यदि सर्जना है तो अनुवाद पुनःसर्जन है। केवल प्रक्रिया का अंतर है। मूल कलाकार अपने भावों को अपनी कला में उतारता है, जबकि अनुवादक किसी और मूल के आधार पर सृजन करता है। मूल को हृदयंगम करके वह अपने अनुसार उसे लक्ष्य भाषा में ढालता है। इस कलात्मकता के कारण ही हर व्यक्ति केवल योग्यता और अभ्यास से अच्छा अनुवादक नहीं बन सकता। अन्य अनेक गुणों की भाँति ही यह अनुवाद-कला भी कुछ बी अनुवादकों में होती है और एक सीमा तक सहजात होती है।

किंतु यदि बहुत अच्छे अनुवादकों की बात छोड़ दें तो काफी अनुवादक ऐसे ही होते हैं जो अनुवाद कर तो लेते हैं किंतु उनके अनुवाद की उपलब्धि शिल्प से आगे नहीं बढ़ पाती। योग्यता, अभ्यास तथा वातारण आदि से व्यक्ति इस प्रकार अनुवादक बन सकता है। इसके लिए किसी भी सहज प्रतिभा की कोई खास आवश्यकता नहीं। किंतु इस श्रेणी के अनुवादक ठीक वैसे ही करते हैं जैसे अन्य शिल्पों के शिल्पी करते हैं। वे पुनःसर्जा नहीं कर पाते।

इस प्रकार अनुवाद विज्ञान भी है, शिल्प भी है और कला भी है।

6. अनुवादक के गुण

अच्छे अनुवादक के लिए तीन बातें आवश्यक हैं –

पहली बात तो है स्रोत भाषा का ज्ञान। स्रोत भाषा का ज्ञान भी कई प्रकार का हो सकता है। मान लें, किसी रूसी पुस्तक का अनुवाद करना है। यदि वह पुस्तक गणित की है जो रूसी भाषा के सामान्य ज्ञान से काम चल सकता है, किंतु मान लीजिए, वह कोई कविता-पुस्तक है या ऐसा उपन्यास है जिसमें आंचलिकता का पुट है, तो फिर भाषा-ज्ञान का अच्छा-खास होना आवश्यक है। वस्तुतः इसका कोई खास अर्थ नहीं है कि अनुवादक को स्रोत भाषा का ज्ञान हो। उसे मूल सामग्री के स्तर का वैसा ज्ञान होना चाहिए जैसा कि उसे पढ़कर अच्छी तरह समझने या रसास्वादन करनेवाले मूल भाषा-भाषी को होता है। ज्ञान उस स्तर से जितना ही कम होगा, उतनी ही त्रुटि होने की संभावना अनुवाद में बढ़ जाएगी।

अनुवादक की दूसरी आवश्यकता है लक्ष्य भाषा का विषय के अनुरूप समुचित ज्ञान। अर्थात उतना ही ज्ञान, जितना लक्ष्यभाषा-भाषी को उस विषय में ठीक अभिव्यक्ति के लिए अपेक्षित है। यह ज्ञान भी जितना कम होगा, अनुवाद के उतने ही त्रुटिपूर्ण होने की संभावना बढ़ जाएगी।

अनुवादक की तीसरी आवश्यकता है विषय का ज्ञान। विषय के ठीक ज्ञान के बिना प्रायः देखा गया है कि अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठता है। विषय के ज्ञान के संदर्भ में भी उपर्युक्त बातें दुहराई जा सकती हैं। अर्थात् यह ज्ञान कम-से-कम उस स्तर का तो होना चाहिए जिस स्तर की अनूद्य सामग्री हो।

7. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

अनुवाद प्रक्रिया के पाँच चरण हैं –

पाठ-पठन – पहला चरण अनूद्य सामग्री को पढ़ना है। यह पा-पठन दो दृष्टियों से किया जाता है। भाषिक अर्थ की दृष्टि से तथा वैषयिक अर्थ की दृष्टि से। पाठ-पठन में हो सकता है कि कहीं भाषा कठिन हो और उसे समझने की आवश्यकात हो। इसके लिए उस भाषा के अच्छे जानकार या कोश आदि की सहायता ली जा सकती है।

पाठ-विश्लेषण – दूसरे चरण में अनुवाद की दृष्टि से पाठ का विश्लेषण करते हैं। आवश्यकतानुसार पाठ पर, इस चरण में निशान लगाए जा सकते हैं। इस विश्लेषण में

मुख्य बल इस बात पर दिया जाना चाहिए कि कहाँ शब्द का अनुवाद करना है, कहाँ पदबंध का, कहाँ उपवाक्य का, कहाँ वाक्य का और कहाँ एक वाक्य को एकाधिक वाक्यों में तोड़कर अनुवाद करना है, तथा कहाँ एकाधिक वाक्यों को एक वाक्य में मिलाकर अनुवाद करना है। कभी-कभी प्रोक्तिस्तरीय अनुवाद की आवश्यकता भी पड़ सकती है।

भाषांतरण - इस तीसरे चरण में, दूसरे चरण के पाठ-विश्लेषण के आधार पर विभक्त स्रोत भाषा की इकाइयों का लक्ष्यभाषा की इकाइयों में अंतरण करते हैं। यहाँ अंतरण मुख्यतः तीन प्रकार का हो सकता है – क) किसी इकाई का समान इकाई में जिसे शब्द-शब्द, पदबंध-पदबंध, उपवाक्य-उपवाक्य, वाक्य-वाक्य, वाक्यबंध-वाक्यबंध अंतरण कह सकते हैं। ख) बड़ी इकाई-इकाई छोटी इकाई (जैसे उपवाक्य-पदबंध) ग) छोटी इकाई-बड़ी इकाई 9जैसे पदबंध-उपवाक्य)

समायोजन – यहाँ आकर अंतरित पाठ का लक्ष्यभाषा की दृष्टि से समायोजन करे हैं। इस समायोजन में हमारा ध्यान तीन बातों पर जाना चाहिए – 1. भाषा में सहज प्रवाह हो 2. स्रोत भाषा की छाया न हो 3. अर्थ स्पष्ट हो।

मूल से तुलना - अनुवादक को चौथे चरण में आकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेनी चाहिए। उसे अंत में मूल से एक बार तुलना अवश्य कर लेनी चाहिए। यहाँ देखने की बात यह होती है कि अनुवाद मूल से न कम कह रहा हो, न अधिक कह रहा हो और न कुछ हटकर कह रहा हो। अर्थात् वह अर्थ-संकोच, अर्थ-विस्तार तथा अर्थादेश दोषों से मुक्त हो, तथा यथासंभव उसकी भाषा-शैली भी मूल के अनुरूप हो।

Module-2

8. अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के कई भेद या प्रकार हो सकते हैं। इन भेदों या प्रकारों के मुख्य आधार चार हैं – गैद्यत्व-पद्यक्व, साहित्यिक विधा, विषय और अनुवाद की प्रकृति। इनमें प्रथम तीन अपेक्षाकृत बाह्याधार हैं तथा अंतिम आंतरिक, और इसीलिए ही यही अधिक सार्थक है। इन आधारों पर मुख्य भेद नीचे दिए जा रेह हैं –

क) अनुवाद के गद्य-पद्य होने के आधार पर

1. गद्यानुवाद – जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह अनुवाद गद्य में होता है। प्रायः मूल गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है, किंतु यह कोई आवश्यक नहीं है। मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद किया जा सकता है और ऐसे अनुवाद किए भी गए हैं।
2. पद्यानुवाद – यह अनुवाद पद्य में होता है। प्रायः मूलपद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है, किंतु मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है, और ऐसे अनेक अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुए हैं। इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहते हैं।
3. मुक्त छंदानुवाद – यह अनुवाद मुक्तछंद में होता है। इसमें जो छंद होता है वह तुक-मात्रा आदि उन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक हैं। शेक्सपियर के कई हिंदी अनुवाद इसके उदाहरण हैं। सामान्यतः मूल सामग्री मुक्त छंद में होने पर ही मुक्त छंदानुवाद किया जाता है, किंतु मूल गद्य या पद्य के भी ऐसे अनुवाद हो सकते हैं, और होते हैं।

ख) साहित्यिक विधा के आधार पर

इस आधार पर ऐसे तो कई भेद हो सकते हैं, किंतु मुख्य भेद इस प्रकार हैं –

1. काव्यानुवाद – ड्डिसी काव्य रचना का अनुवाद। यह अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्त छंद किसी में भी हो सकता है। यों प्रायः काव्य का अनुवाद पद्य या मुक्त छंद में ही किया जाता है। यह प्रश्न विवाद का रहा हैकि काव्य का अनुवाद हो भी सकता है या नहीं। स्पष्ट ही, काव्यानुवाद होते रहे हैं, अतः अवश्य हो सकते हैं। हाँ अवश्य है

कि शैली और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से मूल का अनुगामी सफल अनुवाद करना बहुत कठिन है। कभी-कभी तो यहग इतना कठिन होता है कि असंभव की सीमा छू लेता है। आगे अलग से काव्यानुवाद पर विस्तार से विचार किया जा रहा है।

2. नाटकानुवाद – ड्डिसी नाटक का नाटक रूप में अनुवाद। यों अन्य साहित्यिक विधाओं के भी नाटक रूप में अनुवाद हो सकते हैं और इसके ठीक उलटे नाटक के भी काव्य या कहानी रूप में अनुवाद होते हैं। नाटक का नाटक रूप में अनुवाद काफी कठिन होता है, क्योंकि उसे पठनीय होने के साथ-साथ ऐसा होना चाहिए कि रंगमंच पर खेला भी जा सके. इसलिए रंगमंच की सारी आवश्यकताओं तथा विशेषताओं का जानकार ही सफल नाटकानुवाद कर सकता है।
3. कथानुवाद – कथा-साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) का कथा-साहित्य में अनुवाद। इस श्रेणी का अनुवाद काव्यानुवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है। इस आधार पर रेखाचित्रानुवाद, निबंधानुवाद, संस्मरणानुवाद आदि अन्य भी कई भेद-विभेद हो सकते हैं।

ग) विषय के आधार पर

विषय के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद किए जा सकते हैं। जैसे सरकारी रिकाडों का अनुवाद, गजेटियरों का अनुवाद, पत्रकारिका से संबद्ध अनुवाद, विधि-साहित्य का अनुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, गणित-साहित्य का अनुवाद, ऐतिहासिक साहित्य (अभिलेखादि) का अनुवाद, धार्मिक साहित्य (बाइबिल आदि) का अनुवाद तथा ललित साहित्य का अनुवाद आदि।

घ) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर

1. मूलनिष्ठ अनुवाद – ऐसा अनुवाद जो यतासाध्य मूल का अनुगमन करे। मूल के अनुगमन में अनुवादक ध्वनि विचार (कथ्य) तथा अभिव्यक्ति (कथन पद्धति) दोनों ही पर होता है. वह अपने अनुवाद यतासंभव दोनों ही दृष्टियों से मूल के निकट रखा चाहता है।
2. मूलमुक्त अनुवाद – जैसा कि नाम से स्पष्ट है, अनुवाद के इस प्रकार में अनुवादक को काफी छूट रहती है, किंतु यह छूट प्रायः अभिव्यक्ति या कथन-शैली की तरफ ही विशेष होती है, कथ्य या विचार की तरफ से नहीं।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कुछ अन्य प्रकारों का भी उल्लेख किया जाता है, जो तत्वतः मूलनिष्ठ और मूलमुक्त से भिन्न हीं हैं, बल्कि अनेक बातों में एक-दूसरे पर ओवरलैप करते हैं। ये अन्य प्रकार अधोलिखित हैं –

1. शब्दानुवाद – यह शब्द अ अनुवाद से बना है। मोटो रूप में इस प्रकार के अनुवाद में मूल के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान हजाता है। शब्दानुवाद का प्रयोग एक से अधिक प्रकार के अनुवादों के लिए होता रहा है। इसलिए इसके कई उपभेद किए जा सकते हैं। अंग्रेज़ में लिटरल ट्रांस्लेशन, वर्बल ट्रांस्लेशन, वर्ड-फार-वर्ड ट्रांस्लेशन आदि इसी को कहते हैं। शब्दानुवाद के मुख्य उपभेद तीन हो सकते हैं –

   अ) जिसमें मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्रायः उसी क्रम में अनुवाद किया जाय। जैसे I am going to home का मैं हूँ जा रहा घर।

   आ) ऐसा अनुवाद जिसमें क्रम आदि तो मूल का नहीं रखते किंतु मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखते हैं और इसीलिए मूल की शैली अनुवाद में स्पष्ट झलकती है।

   इ) शब्दानुवाद का तीसरा रूप वह है जिसे उत्तम कोटि का या आदर्श शब्दानुवाद कहा जा सकता है। इसमें मूल के प्रत्येक सब्द, बल्कि प्रत्येक अभिव्यक्ति-इकाई (जैसे–पद, पदबंध, मुहावरा, लोकोक्ति, उपवाक्य, वाक्य) के लक्ष्यभाषा में प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्यभाषा में संप्रेषित किया जाता है।

2. भावानुवाद – जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इस प्रकार के अनुवाद में मूल के शब्द, वाक्यांश, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्यभाषा में संप्रेषित करते हैं। शब्दानुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री के शरीर पर विशेष होता है तो इसमें उसकी आत्मा पर। अंग्रेज़ी में सैंस-फॉर-सैंस ऐसे ही अनुवाद के लिए कहा जाता है। भावानुवाद एकाधिक प्रकार का हो सकता है। कभी तो मूल के वाक्यों के हर पद या शब्द पर ध्यान न देकर पदबंध का भावानुवाद, कभी उपवाक्य का भावानुवाद, कभी वाक्य का भावानुवाद, कभी एकाधिक वाक्यों को एक में मिलाकर उनका भावानुवाद, कभी पूरे पैरग्राफ का भावानुवाद और कभी एकाधिक पैरग्राफों को मिलाकर उनका भावानुवाद करते हैं। सामान्यतः मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावोंवाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं, और यदि वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक या विचार-प्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं।

3. छायानुवाद – हिंदी में छाया तथा छायानुवाद का प्रयोग काफी मिलते-जुलते अर्थों में होता है। छाया शब्द का एक प्रकार का पुराना प्रयोग संस्कृत नाटकों में मिलता है। उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं, किंतु पुस्तकों में प्राकृत कथन या छंद के साथ उसकी संस्कृत छाया भी रहती है।
4. सारानुवाद - इशमें मूल की मुख्य बातों का मूलमुक्त अनुवाद होता है। यह संक्षिप्त, अति संक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार का हो सकता है। भारतीय लोकसभा के वाद-विवाद का जो अनुवाद किया जाता है वह प्रायः ऐसा ही होता है।
5. व्याख्यानुवाद - इसमें मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है। स्पष्ट ही व्याख्या व्याख्याता के व्यक्तित्व, ज्ञान तथा दृष्टिकोण पर आधृत होती है, तथा उसमें कथ्य के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरण, प्रमाण इथ्यादि जोड़े जा सकते हैं। इसी कारण व्याख्यानुवाद में अनुवादक केवल अनुवादक न रहकर काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। लोकमान्य तिलक का गीतानुवाद इसी प्रकार का है।
6. आदर्श अनुवाद – यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है, जिसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का अभिव्यक्तितः और अर्थतः लक्ष्यभाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समानकों द्वारा अनुवाद करता है।
7. रूपांतरण - इस शब्द का अर्थ है रूप को बदलना। अनुवाद के इस प्रकार में रूपांतरकार मूल को अपनी रुचि, सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके लक्ष्य भाषा में रखता है। इसमें मूल सामग्री, संक्षिप्त या विस्तृत, सरल या कठिन तथा विधा-रूप में परिवर्तित (अर्थात् कहानी से नाटक, नाटक से कहानी आदि) होकर आती है। पात्रों के नाम, देशकाल या वातावरण आदि में परिवर्तित किए भी जाते हैं, और नहीं भी। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शेक्सपियर के मर्चेंट ऑफ वेनिस का अनुवाद दुर्लभ बंधु अर्थात् वंशपुर का महाजन नाम से किया था। इशमें कथा को पूरी तरह भारतीय कर दिया गया है। वंशपुर वेनिस है। एन्टोनियो को अनन्त, बैसीनियो को बसन्त तथा पोर्शिया को पुरश्री नाम दे दिए गए हैं।
8. वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद – जब दो भिन्न भाषा-भाषी आपस में बात करते हैं तो उनके बीच के अनुवादक को दुभाषिया (इंटरप्रेटर) कहते हैं। दुभाषिया द्वारा किए जानेवाले अनुवाद को किसी अन्य अधिक अच्छे शब्द के अभाव में हिंदी में मैं वार्तानुवाद की संज्ञा देना चाहूँगा। कहीं-कहीं ऐसी व्यवस्था भी होती है कि कोई भाषण या वार्ता किसी एक भाषा में प्रसारित होती है, परंतु विभिन्न स्टेशनों पर उसके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद साथ साथ सुने जा सकते हैं। जो लोग यह अनुवाद करते हैं उन्हें आशु अनुवादक, और उनके कार्य को आशु अनुवाद कह सकते हैं। वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद को अब प्रायः अनुवचन कहते हैं तथा अनुवचन करनेवाले को अनुवाचक (इंटरप्रेटर)।

9. काव्यानुवाद

कविता के अनुवाद को लेकर विद्वानों में काफी विवाद चल रहा है। कुछ लोगों की धारणा है कि काव्यानुवाद असंभव है तथा यह नहीं हो सकता। वास्तव में कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन है, लेकिन वह असंभव है यह नहीं कहा जा सकता। क्योंकि विश्व में अब तक कई हज़ार कविताओं में अनुवाद हुए हैं।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहुँचाना। अनुवादक की दृष्टि से अगर देखें तो कहना होगा कि, ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए जितना उपयोगी है, काव्य आदि रागात्मक साहित्य का अनुवाद भी उसकी अंतवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है और काव्यानुवाद इसी ढंग से बहुत उपयोगी भी है। यही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं, कठिनाइयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपांतर उन्हें अपनी भाषा (स्रोत भाषा) के सहृदय समाज को सौंपने का महान कार्य करता है। वास्तव में यह अनुवादक का पुण्य-कर्म ही है, जो पाठक वर्ग को उपकृत करता है।

काव्यानुवाद आज मात्र कविता के अनुवाद के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द है। साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है काव्य और काव्य का अनुवाद रसिकों, विदवानों तथा अनुवादकों के बीच लंबे समय से विवाद का विषय बन रहा है। कविता के अनुवादक को इसी तरह के कई प्रश्नों के कारण निरुत्साहित किया जाता रहा, उसे तिरस्कृत भी किया जाता रहा। किंतु फिर भी काव्यानुवाद की यह मात्रा निरंतर गतिमान और प्रवाहमान रही।

कविता की रचना प्रक्रिया की विविध जटिलताओं को अच्छी तरह से समझनेवाला सहृदय ही कविता का उत्तम अनुवाद कर सकता है। काव्य अनुवादक दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो पृष्ठभूमियों के बीच पुल का निर्माण करता है। वह दो संस्कृतियों के बीच साक्षात्कार का माध्यम बनता है। उसकी इसी दूसरी भूमिका के कारण कालिदास, होमर, शेक्सपियर आदि बहुत से महान कवियों की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति संभव हो सकी है। इससे हमें यह मालूम होता है कि आज की दुनिया में काव्यानुवाद को बहुत प्राधाव्य है और शायद इसी कारण से कविता के अनुवाद की बहुत सी समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के कारण कविता को अनुवाद करते समय कभी कभी अपूर्णता ज़रूरी होती है। शायद इसको मुख्य कारण मानकर इस प्रकार की बातें कही गई हैं—

1. Traduttori traditori अनुवादक वंचक होते हैं) – एक इतालवी कहावत
2. Translation of a literary work is as taste less as a stewed strawberry. – H.De Forest Smith

एक कविता को अनुवाद करते समय मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है। यह काम एक अत्यंत संवेदनशील अनुवादक ही कर सकता है।

काव्यानुवाद की मुख्य समस्याएँ

क) स्रोत भाषा के सभी शब्दों की लक्ष्य भाषा में समान अभिव्यक्ति की समस्या

साहित्यकार अपनी रचनाओं में शब्दों का प्रयोग चुनकर करता है। कवि कविता लिखने में और भी अधिक चयन करता है। वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्रायः अपना कोशीय अर्थ या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते हैं। ध्वनि और अर्थ का यह संबंध उन चुने हुए शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में एक विशेष जीवंतता आ जाती है। अनुवाद में प्रायः उस शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है, ध्वनि या वर्ण मैत्री आदि के स्तर का अनुवाद इसलिए संभव नहीं हो पाता है। हर भाषा में इस प्रकार के शब्द होते ही नहीं जिनमें अर्थ और ध्वनि का यह संबंध हो। मान लें, किसी हिंदी कविता में 'बिजली' शब्द आया है। स्पष्ट ही बिजली में तेज़ी और तरलता की भी ध्वनि है। उसके स्थान पर अंग्रेज़ी में thunder या thunder bolt रखें तो इनमें 'कड़क' है और lightning रखें तो 'चकाचौंध' है। इस तरह काव्य भाषा में ये शब्द बिजली के पर्याप्त नहीं है, यद्यपि सामान्य भाषा में है। इसका आशय यह हुआ कि इन शब्दों के द्वारा अनुवाद करने की मूल की तेज़ी और तरलता चली गई और नये तत्व कड़क या चकाचौंध की वृद्धि हो गई। अर्थात कुछ घट गया और कुछ बढ़ गया।

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिंब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उश पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिंब नहीं उभार सकता। अंग्रेज़ी कवि की कविता में प्रयुक्त spring शब्द का ठीक प्रतिशब्द हिंदी में वसंत इसलिए नहीं हो सकता कि अंग्रेज़ी भाषा के मन में स्प्रिंग का चित्र है, जो भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है। रूप सा जाड़ा और अरब का जाड़ा एक नहीं हो सकता, न भारत की गर्मी और फ्रांस की गर्मी। काव्यभाषा में प्रयुक्त ऐसे शब्दों का प्रतिनिधित्व इसलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्दों द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता।

ख) अलंकारों की समस्या

काव्य प्रायः अलंकार प्रधान होती है, किंचु एक भाषा के अलंकारों की दूसरी भाषा में ठीक-ठीक उतार पाना कठिन और कभी कभी तो असंभव हो जाता है। यों तो अर्थालंकार की उपमानों की असमानता के कारण कभी कभी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करते हैं। उदा - वह उल्लू जैसा है, में उल्लू मूर्खता का प्रतीक है, किंतु इसका अंग्रेज़ी अनुवाद करना हो और उल्लू के स्थान पर ग्ध्थ् रख दें तो काम नहीं चलेगा, क्योंकि अंग्रेज़ी में उल्लू बुद्धिमान माना जाता है।

किंतु अनुप्रास आदि शब्दालंकारों में तो यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है। 'कनक कनक ते सौगुन' का किसी भाषा में तब तक अनुवाद नहीं हो सकता जब तक उस भाषा में कोई ऐसा शब्द न हो जिसका अर्थ 'सोना' तथा 'धतूरा' दोनों हो।

ग) छंदों का अनुवाद

कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, अतः उसका अपना प्रभाव भी होता है। साथ ही उसका एक सीमा तक कविता के भाव से संबंध भी होता है। भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छंद हैं, तो फारसी आदि में दूसरी तरह के हैं और यूरोपीय भाषाओं में तीसरी तरह के। ऐसी स्थिति में दो ही रास्ते अनुवादक के सामने हैं – या तो लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छंद में अनुवाद कर दे, पर ऐसा करने से मूल छंद का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा, या फिर वह स्रोत सामग्री के छंद में ही अनुवाद करें। किंतु इसमें भी बात नहीं बनेगी। यदि ऐसे करे तो भी, लक्ष्य भाषा-भाषी पर अनभ्यस्त होने के कारण वह प्रभात नहीं डाल जाएगा। मूल छंद का जो प्रभाव मूल भाषा-भाषियों पर पड़ता है, अनुवादक किसी भी तरह से लक्ष्य भाषा-भाषी पर नहीं डाल सकता।

घ) काव्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व

कवि ह्रदय ही काव्यानुवाद के साथ न्याय कर सकता है, क्योंकि कविता का अनुवाद अन्य अनुवादों से भिन्न होता है कि वह एक प्रकार से पुनर्रचना होता है। इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। हर काव्यानुवादक उस मूल का अपने अपने ढंग से संस्करण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, उमर खैयाम की एक रुबाई कुछ अनुवादों के साथ देख सकते हैं। कई अनुवाद हिंदी में उपलब्ध हैं, पर एक-एक भिन्न।

काव्यानुवादक सफल अनुवाद नहीं कर सकता, तो फिर सभी प्रकार के कवियों की सभी प्रकार की रचनाओं के एक व्यक्ति द्वारा अनुवाद किए जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इस रूप में विशिष्ट काव्य रचना का अनुवाद भी विशिष्ट काव्य-रचना की तरह ही विशिष्ट मूडनिष्ठ होता है।

ङ) एक भाषा की काव्य-रचना अर्थात अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में लाना मुश्किल है

हर कवि भाषा विशेष का ही होता है, केवल उसी भाषा में कहा जा सकता है और उसी रूप और अर्थ में कहा जा सकता है। उसकी महानता मूल रचना में होती है, ौर मूल को पढ़कर ही हमें उसकी महानता के दर्शन हो सकते हैं। कवि जो कहता है, उसके सौंदर्य हमें उसी भाषा में अच्छे लगते हैं। किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने से ये छूट जाता है। कितने अच्छे अनुवादक हो, अपूर्णता थोड़ा ज़रूर होता है।

च) कविता की शैली

एक भाषा की कविता को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय उसकी काव्यशैली ज़रूर नष्ट हो जाती है। इस बात पर बहुत अधिक चर्चा होती रहती है। अनुवादक मूल कृति की शैली को यथावत् या समतुल्य बनाए रखने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाता। यह उसकी अपनी सीमा भी है और विषय की भी सीमा है काव्यशैली का अनुवाद अधिक असाध्य साधना इसी कारण से होता है।

10. मुहावरे-लोकोक्तियों का अनुवाद

मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद में जिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अनुवादक को जूझना पड़ता है उनमें एक महत्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। हर भाषा की कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं, जिनमें प्रमुख है मुहावरे। कहने का खास ढंग ही मुहावरा है। जब साधारण ढंग से कहने पर उद्दिष्ट प्रभाव नहीं पड़ता तब मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक भाषा का मुहावरा दूसरी भाषा में मिलना उतना संभव नहीं है, लेकिन विश्व की अनेक भाषाओं में मिलते-जुलते मुहावरे पाये जाते हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के सांस्कृतिक स्रोत और आपसी प्रभाव के कारण अनेक समान मुहावरे मिलते हैं लेकिन जिन भाषाओं के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ अलग अलग है, उनमें विभिन्न प्रकार के मुहावरे प्रयुक्त होते हैं और उनके अनुवाद में कठिनाई का अनुभव होता है।

स्रोत भाषा में किसी मुहावरे के मिलने पर सबसे पहले अनुवादक को लक्ष्य भाषा में उसके शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज करनी चाहिए। अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण हिंदी में कई ऐसे मुहावरे प्रयुक्त होते हैं, जो शब्द और अर्थ की दृष्टि से समान हैं।

जैसे – Ups and downs of life - जीवन के उतार-चढ़ाव, Childs play - बच्चों का खेल, Cold war - शीत युद्ध।

इस प्रकार जहाँ लक्ष्यभाषा में स्रोतभाषा के मुहावरों के लिए समान मुहावरा मिलता है तो अनुवादक उसे अपना सकता है। अनुवादक को यदि पूर्ण रूप से समान मुहावरा न मिले वहाँ पर लगभग समान मुहावरों की खोज करनी चाहिए। यहाँ अर्थ की दृष्टि से समान और शब्द की दृष्टि से लगभग समान मुहावरों को चुनना समीचीन है। उदाहरण के लिए – To add fuel in flame आग में घी डालना, Herculean effort - भगीरथ प्रयत्न।

यदि इस प्रकार के शाब्दिक और आर्थिक समानतावाले मुहावरे लक्ष्यभाषा में न मिले तो शाब्दिक समानता को छोड़कर केवल आर्थिक समानता पर ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण – A drop in the ocean - ऊँट के मुँह में जीरा।

लेकिन जहाँ शब्दानुवाद से अर्थ संप्रेषण में कठिनाई आती है वहाँ भावानुवाद की प्रणाली अपना सकते हैं। कभी तो अनुवादक मुहावरों को न पहचानकर उनको सामान्य शब्द मानकर सीधे अनुवाद करने के गलती करते हैं। ऐसे अवसर पर अनुवाद अर्थ का अनर्थ हो जाता है। कभी-कभी अपेक्षित अभिव्यक्ति नहीं हो पाती।

लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

लोकोक्तियाँ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। प्रसंग विशेष में लोकोक्तियों की अर्थवत्ता सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त भाव या विचार से अधिक गहरी होती है। इसी कारण से उनके अनुवाद भी एक कठिन कार्य है। एक से अधिक भाषाओं की लोकोक्ति पर आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार पाना काफी कठिन है। वस्तुतः इन लोकोक्तियों की जडें भाषा विशेष के जीवन और संस्कृति में बहुत गहरी होती है। अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य भाषाओं की परंपरा से परिचित हुए बिना उनकी संस्कृति को समझे बिना लोकोक्तियों को ठीक से समझना काफी कठिन है। इस क्षेत्र की कठिनाई का एक कारण लोकोक्ति कोश

का अभाव है। द्वैभाषिक लोकोक्ति कोश बनाना भी कोई सरल काम नहीं है। इसका कारण यह है कि दो भाषाओं की लोकोक्तियों में समानार्थी लोकोक्तियाँ केवल कम ही मिल जाएगी। समानार्थी लोकोक्ति के मिलने पर शब्दों के माध्यम से मूल भाषा की लोकोक्ति को समझ पाना आसान नहीं है। कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ भी हैं, जिनका अपनी पूरी अर्थवत्ता के साथ बहुत मुश्किल से समझाई जा सकती है। अन्य शब्दों के द्वारा उनका पूरा व्यंग्य समझ पाना भी कठिन है।

यदि अनुवादक के सामने लोकोक्ति के अनुवाद की समस्या आये तो सबसे पहले अनुवादक को स्रोत भाषा की लोकोक्ति के समान लोकोक्ति लक्ष्यभाषा में खोजनी चाहिए। यदि लक्ष्यभाषा में समान लोकोक्ति मिले, उसे अनुवादक अपना सकता है।

उदा : 1. An empty mind os devils workshop – खाली दिमाग शैतान का घर।

2. Necessity is the mither of invention - आवश्यकता आविष्कार की जननी है।
3. Empty vessal makes much noise - अधजल गहरी छलकत जाई।
4. As you show so shall you reep - जैसा बोएगा वैसा काटेगा।

शब्द और भाव दोनों की समानता वाली लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक को अपना ध्यान समान भाववाली, लेकिन शब्द स्तर पर भिन्नता रखनेवाली लोकोक्ति पर केंद्रित रहना पडेगा।

1. A bad carpenter quarrels with his tools – नाच न जाने आँगन टेढा।
2. Killing two birds with one stone – एक पंथ दो काज।
3. It is no use crying over split milk - अब पछतावे होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

अनुवादक के सामने सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब उसे स्रोत भाषा की किसी लोकोक्ति के लिए लक्ष्यभाषा में समान लोकोक्ति नहीं मिलती। ऐसे अवसर पर अनुवादक उका शब्दानुवाद कर सकता है। लेकिन शब्दानुवाद वहीं किया जा सकता है, जहाँ उस अनुवाद से मूल का वही अर्थ लक्ष्य भाषा में भी आ जाता है।

उदा -

1. All that glitters is not good - हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती।
2. A man is known by the company keep - मनुष्य अपनी सगत से पहचान जाता है।।

शब्दानुवाद करते समय कई प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं। स्रोत भाषा की सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी अत्यंत आवश्यक है। ऐसी लोकोक्तियाँ भी हैं, जिनका शब्दानुवाद करने पर ठीक अर्थ प्राप्त नहीं होता। ऐसी लोकोक्ति का भावानुवाद करना ही उचित है।

11. अनुवाद के क्षेत्र

अनुवाद के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं –

साहित्य

संस्कृति

बातचीत

कार्यालय एवं प्रशासन

धर्म एवं दर्शन

न्यायालय

शिक्षा

सामाजिक विज्ञान

सूचना प्रौद्योगिकी

विज्ञान

वाणिज्य

संप्रेषण एवं संचार

राजनीति एवं कूटनीति

पर्यटन

वैश्वीकरण

12. कार्यालयी अनुवाद

कार्यालयी अनुवाद से आशय है, वह अनुवाद जो विभिन्न प्रकार के कार्यालयों में अंग्रेज़ी से हिंदी में किया जाता है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए इन पंक्तियों के लेकक की पुस्तक कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ देखी जा सकती है। कार्यालयी अनुवाद में तरह-तरह के प्रशासनिक कार्यालयों से संबद्ध अनुवाद, बैंकों से संबद्ध अनुवाद, रेलवे से संबद्ध अनुवाद, न्यायालयों से संबद्ध अनुवाद, होटलों से संबद्ध अनुवाद, डाक और तार से संबद्ध अनुवाद तथा बीमा से संबद्ध अनुवाद आदि अनेकानेक प्रकार के अनुवाद आते हैं। इसकी कुछ विशेषताएँ ये हैं –

कार्यालयी अनुवादों की पहली विशेषता तो यह होती है कि इनके लिए प्राप्त सामग्री मूलतः अभिधाप्रधान होती है। सर्जनात्मक साहित्य की तरह लक्षणा और व्यंजना का उनमें प्रयोगन हीं होता। इसीलिए अनुवाद के लिए प्रयुक्त भाषा भी ऐसी ही होती है तथा ऐसी ही होनी चाहिए। उदाहरण के लिए क) Copy of the letter referred to above is sent herewith उल्लिखित पत्र की प्रति इसके साथ भेजी जा रही है। ख) His name is not born in the seniority list वरिष्ठता सूचि में उसका नाम नहीं है। ग) In the absence of any rules past practice is the Law नियमों के अभाव में पिछली परिपाटी कानूनी है।

कार्यालयी अनुवाद की दूसरी विशेषता यह होती है कि उसमें प्रायः पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अनिवार्यतः होता है और ये पारिभाषिक शब्द प्रत्येक विषय के काफी कुछ अलग-अलग होते हैं। रेलवे के अलग, तो कचहरी के अलग और बैंकों के अलग।

Module 3

13. पारिभाषिक शब्द-अर्थ

शब्द मोटे रूप से दो प्रकार के होते हैं –

1. सामान्य शब्द – ऐसे शब्द जिनका प्रयोग समाज में सामान्य व्यवहार-विषयक बातों की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य रूप से होता है। हर भाषा की सामान्य अभिव्यक्ति के मूल आधार ये ही शब्द होते हैं। इनमें भाषा के सारे सर्वनाम तथा सामान् जीवन से संबद्ध बहुप्रयुक्त संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि आते हैं। सामान्यतः कोई व्यक्ति जब कोई भाषा सीखता है तो पहले इन्हीं शब्दों को सीखता है। ऐसे शब्दों का प्रयोग हम अपने सामान्य जीवन को चलाने कि लिए करते हैं।
2. पारिभाषिक शब्द – पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे रसायनशास्त्र, गणित, भोतिकी, मनोविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, अलंकारशास्त्र, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि)

14. पारिभाषिक शब्द के गुण

किसी भाषा के पारिभाषिक शब्द के निम्नांकित गुण होने चाहिए –

1. उच्चारण की दृष्टि से प्रयोक्ता भाषा-भाषियों के लिए पारिभाषिक शब्द को सरल होना चाहिए।
2. पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित और स्पष्ट होना चाहिए।
3. एक पारिभाषिक शब्द का एक ज्ञान या शास्त्र में एक ही अर्थ होना चाहिए।
4. एक ज्ञान या शास्त्र में एक संकल्पना या वस्तु के लिए एक ही शब्द होना चाहिए।
5. शब्द यथासाध्य छोटा हो।
6. पारिभाषिक शब्द यथासाध्य एक शब्द का या मूल शब्द होना चाहिए, एक से अधिक शब्दों का नहीं।
7. पारिभाषिक शब्द ऐसा होना चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर उपसर्ग, प्रत्यय या शब्द आदि जोड़कर उससे अन्य शब्द सरलता से बनाये जा सके।
8. समान श्रेणी के पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए।
9. संबद्ध संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए संबद्ध शब्द होना चाहिए।
10. हर शब्द को दूसरे से इतना अलग होना चाहए कि उसे सुन या पढ़कर किसी और पारिभाषिक शब्द का भ्रम न हो।

15. पारिभाषिक शब्दावली के संप्रदाय

मूल लेखक अपनी भाषा में पारिभाषिक शब्दावली की कमी कैसे दूर करें या अनुवादक स्रोत सामग्री के पारिभाषिक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में शब्द न मिलने पर कहाँ से शब्द लाये ? ये प्रश्नों को लेकर थोड़ा विवाद है। भारतीय भाषाओं मुख्यतः हिंदी में ऐसे प्रश्नों को लेकर चार प्रकार के मत व्यक्त किये हैं, जिन्हें पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में चार संप्रदायों की संज्ञा दी गई है –

1. पुनरुद्धारवादी, राष्ट्रीयतावादी, प्राचीनतावादी अथवा संस्कृतवादी - इस वर्ग के भारतीय भाषाओं की सारी की सारी पारिभाषिक शब्ददावली संस्कृत से लेने के पक्ष में हैं। वे यथासाध्य अधिक से अधिक शब्दों के प्राचीन संस्कृत वाङ्मय से लेना चाहते हैं तथा जिन आधुनिक पारिभाषिक शब्दों के लिए संस्कृत में शब्द नहीं हैं, उनके लिए समास-पद्धति द्वारा दो या अधिक संस्कृत शब्दों के मेल से, अथवा संस्कृत शब्द में उपसर्ग-प्रत्यय जोड़कर अथवा संस्कृत की धातुओं में या कभी-कभी आवश्यक होने पर नई धातुएँ बनाकर, उनमें प्रत्यय उपसर्ग जोड़कर नए तथाकथित तत्सम शब्द हनाना चाहते हैं। डॉ.रघुवीर इस संप्रदाय के प्रमुख समर्थक के रूप में प्रसिद्ध हैं। आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित प्राचीन भारतीय संस्कृति के भक्त या इस श्रेणी के अनेक अन्य विद्वान भी इसके समर्थक रहे हैं। इस मत के पक्ष-विपक्ष में कई बातें कही जा सकती है। जहाँ तक इसके पक्ष में तर्कों का प्रश्न है, ये बातें मुख्य हैं – क) संस्कृत हमारे देश की प्राचीन गरिमामण्डित भाषा है और यूरोपीय भाषाओं के लिए जो स्थान ग्रीक-लैटिन का है भारतीय भाषाओं के लिए वही स्थान संस्कृत का है। ऐसी स्थिति में वे लोग जब अपने पारिभाषिक शब्द प्रायः ग्रीक-लैटिन से लेते या बनाते हैं तो हमें भी संस्कृत से लेने या बनाने चाहिए। ख) संस्कृत भाषा धातु, प्रत्यय, उपसर्ग तथा समास-शक्ति के कारण बड़ी उर्वरा है और बड़ी सरलता से उसके आधार पर नए शब्द बनाए जा सकते हैं। ग) प्राचीन भाषाओं में पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से संस्कृत काफी संपन्न है। डॉ.रघुवीर ने नहर के लिए कुल्या, सड़क के लिए रथ्या, रेलवे स्टेशन के लिए स्थाव तथा पेन के लिए मसीपथ दिया है। कुछ अन्य शब्द हैं - रेल - संयन, टिकट - संयान-पत्र, रिक्शा – नरयान, बल्ब – विद्युत्कन्द, मेज़ – पटल, एकड़ - प्रहल, मिल – निर्माणी आदि।

2. शब्दग्रहणवादी, स्वीकरणवादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी या आदानवादी – केंद्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने 1948 को पाँचवें अधिवेशन में यह सिफारिश की। मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद, डॉ.एस.एस.भटनागर, डॉ.जी.पी.घोष, ज.बीरबल, डॉ.सी.लूथरा इस वर्ग के प्रतिनिधि हैं। अधिकांश विज्ञानवेत्ता तथा अंग्रेज़ी परंपरा के लोग इसी पक्ष में हैं। वे चाहते हैं कि अंग्रेज़ी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ले लिया जाय। इसके पक्ष में निम्नांकित बातें कही जा सकती हैं – क) चूँकि अंग्रेज़ी और अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रचार विश्व में सर्वाधिक है, अतः उससे परिचित होने पर हमारे विज्ञान या शास्त्रवेत्ताओं को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य को समझने में आसानी होगी, साथ ही वह शब्दावली जिन-जिन भाषाओं में प्रयुक्त हो रही है, उसे बोलनेवाले, केवल सामान्य भाषा सीखकर हमारे वैज्ञानिक और शास्त्रीय साहित्य को समझ सकेंगे। ख) वह रास्ता अपनाने से अनुवादक या लेकक के लिए शब्दावली की समस्या सदा-सर्वदा के लिए सुलझ जाएगी।
3. तीसरा संप्रदाय हिंदुस्तानी या प्रयोगवादी है। इसमें हिंदुस्तानी भाषा के सार्थक पण्डित सुंदरलाल, उस्मानिया विश्वविद्यालय तथा हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी आदि का नाम लिया जा सकता है। उस्मानिया यूनिवर्सिटी के तीन शब्द हैं – Absolutism - चालबढ़ाव, Acceleration - अरोकवाद, Reaction - पलटकारी।
4. चौथा संप्रदाय लोकवादी है। इसने तो जनता से शब्द ग्रहण किये हैं (दलबदलू, आयाराम गयाराम - defector, घुसपैठिया - infiltrator या जनप्रचलित शब्दों के योग से शब्द बनाये हैं, जैसे जच्चाघर - इसके लिए अन्य दो संप्रदायों के शब्द हैं मैटर्निटी होम, प्रसूतिगृह, बिजलीघर - इसके लिए अन्य दो संप्रदायों के शब्द हैं पावर हाउस, विद्युतगृह) वस्तुतः यह संप्रदाय हिंदी की प्रकृति के अनुरूप तो है लेकिन इस प्रकार हिंदी के लिए सभी प्रकार के पारिभाषिक शब्द नहीं जुटाए जा सकते, अतः केवल इससे हिंदी का काम नहीं चल सकता।
5. अंतिम मत मध्यमार्गी या समन्वयवादी है। जो भी इस विषय पर गंभीरता से विचार करेगा, प्रायः इसी मत का समर्थन करेगा। इस मत के अनुसार सुविधा और हिंदी आदि भारतीय भाषाओं की प्रकृति की दृष्टि से शब्दग्रहण (अंतर्राष्ट्रीय, अंग्रेज़ी, संस्कृत, प्राकृत, आधुनिक भाषाओं के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य, सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा बोलियों से) तथा नव शब्द-निर्माण दोनों का समन्वय किया जा सकता है। भारत सरकार की ओर से स्थापित वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने भी लगभग इसी प्रकार का मत व्यक्त किया था।

16. पारिभाषिक शब्द

Account	- लेखा, खाता
Account book	- लेखा बही
Account head	- लेखा शीर्ष
Accountant	- लेखाकार
Account General	- महालेखाकार
Account Officer	- लेखा अधिकारी
Acknowledgement	– पावती
Act	- अधिनियम
Acting	– कार्यकारी
Action	- कारवाई
Ad hoc	- तदर्थ
Adjournment	- स्थगन
Administration	- प्रशासन
Administrator	- प्रशासक
Admissibility	- ग्राह्यता, स्वीकार्यता
Advalorem	- यथामूल्य
Advance	- अग्रिम
Advisor	- सलाहकार
Affidavit	- शपथपत्र, हलफनामा
Agency	- अभिकरण
Agenda	- कार्यसूची
Agreement	- करार, अनुबंध
Allegation	- आरोप, अभिकथन
Allotment	- आबंटन
Allowance	- भत्ता
Allowance, city compensatory	- नगर प्रति-पूरक भत्ता
Allowance, dearness	- महंगाई भत्ता
Allowance, travelling	- यात्रा भत्ता
Amendment	- संशोधन
Anomaly	- असंगति
Antecedents	- पूर्ववृत्त

Anticipated expenditure	- प्रत्याश्चित व्यय
Anti-corruption branch	- भ्रष्टाचार-निरोध शाखा
Appendix	- परिशिष्ट
Appointment	- नियुक्ति
Appropriation	- विनियोजन
Approval	- अनुमोदन
Article	- अनुच्छेद, नियम
Assistant	- सहायक
Assistant auditor	- सहायक लेखा परीक्षक
At par	- सममूल्य
Attached	- संलग्न
Attestation	- साक्ष्यांकन
Audit	- लेखापरीक्षा
Auditor	- लेखापरीक्षक
Autonomous	- स्वायत्त
Bearer	- वाहक
Bill	- विधेयक, हुंडी
Office development Block	- खंड विकास अधिकारी
Cabinet	- मंत्रिमंडल
Candidate	- अभ्यर्थी, उम्मीदवार
Census	- जनगणना
Centralization	- केंद्रीकरण
Chancellor	- कुलपति
Chairman	- सभापति
Charge sheet	- आरोप पत्र
Chief justice	- मुख्य न्यायमूर्ति
Chronological summary	- तारीखवार सार
Citizenship	- नागरिकता
Circular	- परिपत्र
Claim	- दावा
Clerical error	– लेखन-अशुद्धि
Clerk, lower division	- अवर श्रणी लिपिक
Clerk, upper division	- प्रवर श्रेणी लिपिक

Commission	-	आयोग
Commissioner	-	आयुक्त
Community	-	समुदाय
Communiqué	-	विज्ञप्ति
Competent authority	-	सक्षम-अधिकारी
Concurrence	-	सहमति
Consultant	-	परामर्शदाता
Contingencies	-	आकस्मिक व्यव
Controller	-	नियंत्रक
Demotion	-	पदावनति
Deputation	-	प्रतिनियुपक्ति
Designation	-	पदनाम
Dispatch	-	प्रेषण
Director	-	निदेशक
Directorate	-	निदेशालय
Directory	-	निर्देशिका
Discrepancy	-	विसंगति
Discretionary power	-	विवेकाधिकार
Dissent	-	विसम्मति, असहमति
Division	-	प्रभाग, मंडल
Document	-	प्रलेख, दस्तावेज़
Draft	-	प्रारूप, मसौदा
Drafting	-	प्रारूपण, मसौदा लेखन
Draftsman	-	प्रारूपकार
Election commission	-	निर्ववाचन आयेग
Emergency	-	आपातस्थिति
Emoluments	-	परिलब्धियाँ
Employer	-	नियोक्ता
Enclosure	-	संलग्न
Enquiry	-	जाँच, पूछताछ
Ex-officio	-	पदेन
Ex parte	-	एकपक्षीय
Faculty	-	संकाय

Fair	-	स्वच्छ पत्र
File	-	मिसिल
Finance advisor	-	वित्त सलाहकार
Financial year	-	वित्तवर्ष
Fund provident	-	भविष्य निधि
Gazette	-	राजपत्र
Gazetted officer	-	राजपत्रित अधिकारी
General Manager	-	महाप्रबंधक
Governor	-	राज्यपाल
Grant	-	अनुदान
Guidance	-	संदर्शन
Headquarter	-	मुख्यालय
Honorarium	-	मानदेय
Honorary	-	अवैदनिक
Identity card	-	पहचान पत्र
Income tax	-	आयकर
Interest	-	ब्याज
Invoice	-	बीजक
Joint director	-	संयुक्त निदेशक
Judicial	-	न्यायिक, अदालती
Junior	-	कनिष्ठ
Jurisdiction	-	क्षेत्राधिकार अवकाश
Leave	-	अवकाश
Leave Earned	-	अर्जित छुट्टी
Leave Maternity	-	प्रसूति छुट्टी
Leave Restricted	-	वैकल्पिक, प्रतिबंधित सीमित
Legislature	-	विधायिका
Liaison officer	-	संपर्क अधिकारी
License	-	अनुज्ञसि
Lien	-	पूर्वग्रहणाधिकारी
Life Insurance Corporation	-	जीवन बीमा निगम
Mailing list	-	डाक सूची
Maintenance	-	अनुरक्षण

Man power directorate	-	जनशक्ति निदेशालय
Management	-	प्रबंधन, व्यवस्था
Managing Director	-	प्रबंधक निदेशक
Mandate	-	अधिदेश
Mayor	-	महापौर
Migration certificate	-	प्रवास अधिकारी
Minister	-	मंत्री
Minister Chief	-	मुख्यमंत्री
Minister of state	-	राज्यमंत्री
Minister without portfolio	-	निर्विभाग मंत्री
Ministry	-	मंत्रालय
Minutes	-	कार्यवृत्त
Misappropriation	-	दुर्विनियोग
Mobile squad	-	चलदस्ता
Modus operandi	-	कार्यप्रणाली
Motion	-	प्रस्ताव
Motto	-	आदर्शवाक्य
Municipality	-	नगरपालिका
Needful	-	आवश्यक कार्रवाई
No demand certificate	-	बेबाकी पत्र
No objection certificate	-	अनामति पत्र
Non-gazetted	-	अराजपत्रित
Non-official	-	गैर-सरकारी
Nominated	-	मनोनीत
Notification	-	अधिसूचना
Oath	-	शपथ
Officer in charge	-	प्रभारी अधिकारी
Office Memorandum	-	कार्यालय ज्ञापन
Officer on special duty	-	विशेष कार्याधिकारी
Official	-	शासकीय, सरकारी
Officiating	-	स्थानापन्न
On Probation	-	परिवीक्षाधीन
Panel	-	नामिका

Parliament	-	संसद
Part time	-	अंशकालीन
Passport	-	पारपत्र
Pay scale	-	वेतनमान
Payment clerk	-	भुगतान लिपिक
Pending	-	लंबिक, रुका हुआ
Peon	-	चपरासी
Petition	-	अर्जी नवीस
Plan	-	योजना
Plumber	-	नलसाज
Post	-	पद
Posting	-	तैनाती
Postpone	-	स्थगित करना
Prima facic case	-	प्रथम दृष्टि में प्रतीत मामला
Private	-	गैर सरकारी, निजी
Procedure	-	कार्यविधि
Proceedings	-	कार्यवाही
Project	-	परियोजना
Promissory note	-	वचन पत्र
Promotion	-	पदोन्नति
Proposal	-	प्रस्ताव
Provisional	-	अनन्तिम
Qualification	-	योग्यता
Question hour	-	प्रश्नकाल
Quorum	-	गणपूर्ति
Ratio	-	अनुपात
Receipt	-	आवति
Recommendation	-	संस्तुति
Record	-	अभिलेख
Recruitment	-	भर्ती
Registrar	-	कुल सचिव, पंजीकार
Registration	-	पंजीकरण
Registration officer	-	पंजीयन अधिकारी

Reminder	-	स्मरण पत्र, अनुस्मारक
Representation	-	अभ्यावेदन, अनुस्मारक
Representative	-	प्रतिनिधि
Reservation	-	आरक्षण
Resolution	-	संकल्प
Retirement	-	सेवानिवृत्ति
Retrenchment	-	छँटनी
Revenue stamp	-	रसीदी टिकट
Routine	-	नेमी
Salary	-	वेतन
Salesman	-	बिक्रीकर्ता
Sanction	-	स्वीकृति, मंज़ूरी
Satisfactory	-	संतोषजनक
Saving	-	बचत
Scale of pay	-	वेतन मान
Scheme	-	योजना
Seal	-	मुद्रा
Secretary	-	सचिव
Secretary Additional	-	अपर सचिव
Secretary Deputy	-	उपसचिव
Secretary Joint	-	संयुक्त सचिव
Secretary Under	-	अवर सचिव
Secretariat	-	सचिवालय
Section	-	अनुभाग
Section officer	-	अनुभाग अधिकारी
Selection grade clerk	-	प्रवरण कोटि लिपिक
Seniority	-	वरिष्ठता
Service book	-	सेवा पंजी
Signature	-	हस्ताक्षर
Sine dine	-	इनिश्चित काल के लिए
Speaker of Lok Sabha	-	अध्यक्ष
Staff selection commission	-	कर्मचारी चयन आयोग
Standing committee	-	स्थायी समिति

Statement	-	विवरण
Statutory	-	सांविधिक
Stenographer	-	आशुलिपिक
Store keeper	-	भंडारी
Subordinate	-	अधीनस्त
Substitute	-	स्थानापन्न
Superintendent	-	अधीक्षक
Supervisor	-	पर्यवेक्षक
Supplementary	-	अनुपूरक
Surety Bond	-	जमानतनामा
Survey	-	सर्वेक्षण
Suspension	-	निलंबन
Supervisor	-	पर्यवेक्षक
Technical	-	तकनीकी
Time table	-	समय-सारणी
Transfer	-	स्थानांतरण, तबादला
Transport	-	परिवहन
Treasurer	-	कोषाध्यक्ष, खजांची
Treasury	-	कोष, खजाना
Typist	-	टंकक
Undertaking	-	उपक्रम
Verification	-	सत्यापन
Verification officer	-	सत्यापन अधिकारी
Vice chancellor	-	कुलपति
Vigilance officer	-	सतर्कता अधिकारी
Warrant	-	अधिपत्र
Whip	-	सचेतक

17. कंप्यूटर और अनुवाद

यंत्रानुवाद की दिशा में पिछले दशकों से किए गए प्रयास तो सभी कंप्यूटर पर आधारित है। सबसे पहले एक रूसी इंजिनीयर पोत्रोविच्च स्मिरनोव प्रोयस की 1933 में अनुवाद करनेवाले एक यंत्र का नमूना बनाया था। यह यंत्र कंप्यूटर युक्त नहीं था। इसके लगभग दस वर्ष बाद कंप्यूटर के आधार पर अनुवाद करनेवाला यंत्र बनाने की दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ। इस दिशा में लंदन के डॉ.ए.डी.बूथ का नाम लिया जाता है। इंग्लैंड में कई लोगों ने इस कल्पना को साकार करने के लिए प्रयास शुरू किया। इस दिशा में वारेन वीवेर रिचेंस आदि का योगदान सराहनीय है।

यंत्रानुवाद के क्षेत्र में यंत्रकोश का उल्लेख किया जाता है। पूरा कोश अंकों में है, अ7रों में नहीं। न अंकों के आधार पर काम करता है। हर भाषा में शब्दसंख्या बहुत बड़ी होती है। डॉ.रीफ्तर ने यंत्रानुवाद के क्षेत्र में एक नया काम शुरू किया। उन्होंने सोचा कि यंत्र पूरी तरह अनुवाद का काम नहीं कर सकता। किंतु वह अनुवाद में आदमी की मदद कर सकता है। 1950 के आसपास यंत्रानुवाद के क्षेत्र में काम करनेवालों ने यंत्रों को ऐसा बनाने पर बल दिया कि वह स्वयं भाषा के वाक्यों का ठीक विश्लेषण कर सके। 1952 ओसवाल्ड तथा फ्लेचर ने जर्मन के वाक्यों के यांत्रिक विश्लेषण इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया।

अमरिका में इस विषय में अग्रणी नाम बार हिलेल का रहा है। उन्होंने स्वयं चलित यंत्र द्वारा अच्छे अनुवाद का कार्य किया। यंत्रानुवाद के विरोध में उनके दिए गए अनेक तर्कों का उत्तर नहीं दिया जा सका। वस्तुतः अनुवाद केवल एक

भाषा के शब्दों आदि के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्दों आदि को रख देता है जैसी सात्विक क्रिया नहीं है। अच्छे अनुवाद अनुवादक का जीवन अनुभव, दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान तथा सामग्री के हर वाक्य के संदर्भ के प्रति उसकी जागरूकता जैसी मानसिक बातों पर आधारित है। लेकिन इनकी आशा यंत्र से नहीं की जा सकती।

यंत्रानुवाद के क्षेत्र में जापान में एक ऐसी मशीन बनायी गई है जो न केवल अनुवाद कर सकता बल्कि अनुवाद को बोल भी सके। इस यंत्र का नाम है वी.आर.ए. (वोयस रिप्लेयिंग अपारटिक्स) यह यंत्र टोकियो विश्वविद्यालय के यांत्रिकी विभाग ने बनाया था। इसमें अंग्रेज़ी सामग्री टाइप करते हुए भरी जाती थी और यह यंत्र उसका तुरंत अनुवाद करके कागज़ पर लिख लेता था तथा उसे बोल भी देता था। किंतु जापान का यह प्रयास अत्यंत सीमित वाक्यों का सामान्य अनुवाद करने में ही समर्थ रहा।

कंप्यूटर अनुवाद के क्षेत्र में आज काफी प्रगति हुई है। गूगिल जैसे सर्च इंजिन खुद अनुवाद की ऑनलाइन सुविधा देता है। कई सोफ्टवेयर अनुवाद के क्षेत्र में बनाये गये हैं। कई प्रौद्योगिकी संस्थानों ने हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद के सोफ्टवेयर बनाये हैं। छोटे-छोटे कार्यालयों के लिए भी अलग सोफ्टवेयर हैं। सी-डेक, पूणे की ओर से विकसित राजभाषा मंत्रा सोफ्टवेयर को आज काफी स्वीकृति मिल चुकी है। अपनी कई सीमाओं के बावजूद भी कंप्यूटर अनुवाद की दिशा में काफी प्रगति हुई है।

Module-4

18. अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद

1. Taj Mahal is an uncommon attempt to immortalize love. Today the Idol lover Shahjahan is not alive, the idol of beauty Mumthaz is not alive, their power and glory are not alive, but yet all this seem to be alive in the stories with which the Tajmahal has been built. Thousands of tourists gather there, every year to have a glance of India's architectural skills and return home with associated joy. In every noke of this musolium are sold, which attract tourist from far and near to this place. The Tajmahal stands in the historic city of Agra in Uttarpradesh. It was beautiful garden on three sides, and on the forth flows river Yamuna. Within the fort there is a small mirror where in one can see reflection of the Taj.

अनुपम प्रेम का असाधारण प्रयत्न है ताजमहल। आज उस पूजनीय शाहजहाँ या आराध्य सुंदरी मुमताज़ या उसके शक्ति व विजय भी साथ नहीं, फिर भी सब ताजमहल के द्वारा अब भी जीवित है। हर साल हज़ारों यात्रियाँ यहाँ एकत्रित होते हैं और भारत के शिल्प वैदग्ध्य देखकर आनंदित होकर घर चला जाता है। प्रदेश के ऐतिहासिक नगर आग्रा में ताजमहल स्थित है। तीनों भागों में सुंदर बगीचे हैं, और चौथे भाग में यमुना बहती है। किले के अंदर एक छोटा दर्पण है, जिसमें ताज की छाया देख सकते हैं।

2. Prayer has saved my long life. Without it, I should have been a lunatic long ago. I have had many shares of the bitterest public and private experiences. They threw me into temporary despair. If I was able to get rid of that despair, it was because of my prayer. Prayer has not been a part of my life as truth has been. Prayer came out of sheer necessity. I found myself in a flight where I could not possibly be without prayer. The more my faith in God increased, the more irresistible became the yearning for prayer. Life seemed to be dull and vacant without it.

3. Books are our real friends. They always help us. When we are in difficulty they show us the right path. In sorrow they give us comfort. They are always with us. Some of our friends remain with us only in the days of happiness. When sorrow comes they leave us alone. They are not true friends. But books are not like them. They are always faithful to us. It is true that all books are not good.. Bad books have bad effect on the reader. So one must be careful in selecting books.

4. Student life may be regarded as the best period of our life. The child is the father of the man; the future of a man; the future of a boy can be often safely predicted by observing his career has a student. This is the period which leaves its lasting mark on his character. At this period, the mind of the student is plastic and is susceptible to influences, good or bad, and he must take special care in choosing his friends. A man is known by the company he keeps. If the student always moves in good circles, his associates will help in moulding his character. But if he mixes with bad boys, they will ruin him for life.

5. Travelling is an essential part of education. Through the books we read, we get only theoretical knowledge but practical knowledge is obtained only by travelling. We come to know of different people with different manners and customs. We can see their mode of living and dress. We can hear their different languages. Travelling develops our knowledge and outlook. We can improve ourselves by adopting the good methods followed by various nations. It really helps the advancement of civilization. People can learn about the unknown places from the books written by travelers.

19. हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद

1. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन अनिवार्य है। अनुशासन सैनिक जीवन की तो आत्मा ही है। इसके बिना सेना एक भीड़ से बढ़कर कुछ नहीं होती। यह पहली वस्तु है जिसकी परिवार में तालमेल तथा एकता-सूत्र को बनाए रखने के लिए आवश्यकता पड़ती है। समाज तथा राष्ट्र में शांति और एकता बनाए रखने के लिए भी अनुशासन समान रूप से आवश्यक है। अनुशासन के बिना मनुष्य जंगली पशु से बढ़कर कुछ नहीं। यदि प्रभु की सृष्टि में अनुशासन न हो, तो विश्व में अव्यवस्था फैल कर शीघ्र ही प्रलय-दश को प्राप्त हो जाय।

Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. Without discipline an army is no better than a crowd. It is the first thing needed for maintaining the harmony and concord in a family. It is equally necessary in maintaining peace and harmonious relations in a society's or in a nation. Without discipline men are no better than brutes. If there is o discipline in God's creation, chaotic conditions will prevail and this universe would come to topsyturvydom in no time.

2. कुछ बालकों पर आज की शिक्षा और स्वतंत्रता का गंभीर प्रभाव पड़ता जा रहा है। बौद्धिक गुणों तथा सहानुभूतियों के व्यापक रूप से विकसित होने के कारण ऐसे लड़के स्वतंत्रता का स्वागत करते हैं, जिसका कि वे उपभोग कर रहे होते हैं। ऐसा वे मन बहलाव वा खुशी के दृष्टिकोण से नहीं करते, वरन् इस प्रत्याशा में कि इससे उनकी एक व्यापक तथा गंभीर जीवन उपलब्ध होता है, जिससे उनकी एक बौद्धिक शक्तियों के विकास का द्वार खुलता है। इस प्रकार से प्रभावित बालक संभवतः पुराने विचारों और बंधनों से इतने अधीर हो सकते हैं, जितने कि पूर्व पीढ़ियों के लोग भी नहीं थे।

There are boys, however, on whom the education and independence of today are having a deeper effect.The intellectual qualities and sympathies of such boys beinglargely developed, welcome the freedom that they enjoy, This they dom not from the stand point of amusement or pleasure, but from the prospect it opens up to them of wider and deeper life, in which their mental powers may find an outlet. Boys so influenced may probably be more impatient of old fashioned openions and restraint that of a former generation.

3. भारत एक कृषि-प्रधान देश है। इसके सत्तर प्रतिशत से भी अधिक आदमी कृषि पर निर्भर करते हैं। भारतवर्ष एक वृक्ष है, कृषि उसकी जड़ है, आबादी उसका तना है और उद्योग तथा व्यवसाय उसकी डालें एवं पत्तियाँ हैं। यदि हम वृक्ष की जडों को सींचते नहीं तो वह सूख जायेगा और अंत में गिर पड़ेगा। इसका अर्थ यह है कि कृषि की ओर ध्यान न देना देश के भविष्य की ओर ध्यान न देने के समान है। यह दुःख की बात है कि हमें प्रतिवर्ष खाने केलिए विदेशों से माँगना पड़ता है। इसी कारण हमने पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को उच्चप्राथमिकता दी है। प्रति एकड़ उपज बढ़ाने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। सहकारी खेती उन्हीं उपायों में से एक है।

4. मुझे नयी भाषाएँ सीखने का शौक है। यह शौक मैं अपने माता-पिता से ग्रहण किया है। मैं नई भाषाएँ सीखना चाहता हूँ। मैं अपना समय व्यवर्थ नहीं करता। मैं खानी समय में शब्दकोश के पन्ने पलटता हूँ। किंतु शब्दकोश नई भाषा नहीं सिखाता। भाषा का उचित प्रयोग केवल पुस्तकों से सीखना संभव नहीं। उसके लिए तो भाषा विशेष में बोलचाल करना आवश्यक है।

5. एक रचनाकार के व्यक्तित्व का पहचान उनके नाटकों और कविताओं से मिलते हैं। उनके मनोविकार उनकी सूची, समाज के प्रति उनकी दृष्टि, से सब का परिचय उनकी कविता और नाटकों में मिलते हैं। कवि बहुत सारी रचनाओं के रचनाकार होने पर उनके व्यक्तित्व आसानी से उनके नाटकों से परिचित होते। यह कथन संस्कृत के विख्यात नाटककार भास के बारे में बिलकुल सच है।